2 नवम्बर 2006, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सर्व समाधान कारक तो अपना आत्मा है, जो स्वयं ज्ञानस्वरूप है। दूसरों को देखना, सुनना आदि तो निमित्त मात्र हैं।

-ती.महावीर और सर्वोदय तीर्थ,पृष्ठ :62

वर्ष : 29, अंक : 15 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

नवम्बर (प्रथम), 06 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव सानन्द सम्पन्न

1. देवलाली (महा.) : यहाँ भगवान महावीरस्वामी के निर्वाणोत्सव पर दिनांक 19 से 23 अक्टूबर तक डॉ. सुभाषजी चाँदीवाल परिवार मुम्बई की ओर से रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार के आधार से अलिंगग्रहण पर मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित हेमचन्दजी 'हेम' एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड के प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़ ने सम्पन्न कराये।

निर्वाण दिवस के अवसर पर महिला मण्डल द्वारा विशेष प्रश्नमंच का आयोजन किया।

2. कोलकाता : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय, पद्मोपुकुर में दिनांक 19 से 22 अक्टूबर, 06 तक भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा एवं पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये।

3. दिल्ली: यहाँ दीपावली पर्व के अवसर पर श्री महावीरस्वामी पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. पण्डित कैलाशचन्दजी अचल के मार्मिक प्रवचन हुए । विधान के समस्त कार्य ब्र. पण्डित जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

4. मुनई (हिम्मतनगर) : यहाँ दीपावली पर्व के अवसर पर दिनांक 19 से 25 अक्टूबर 06 तक पण्डित विवेकजी शास्त्री पिड़ावा द्वारा विभिन्न कार्यक्रम कराये गये, जिसमें प्रतिदिन प्रात: पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनोपरांत पण्डित विवेकजी शास्त्री के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में जैनदर्शन के मूल सिद्धांतों पर आधारित कक्षा तथा रात्रि में भक्ति के उपरांत प्रवचन का लाभ मिला ।

जिज्ञासुओं पर महान उपकार...

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी विरचित ग्रन्थाधिराज समयसार की **डॉ. भारिल्ल** द्वारा लिखित **ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका** के सम्बन्ध में श्री अखिल भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के मंत्री **डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई** लिखते हैं -

''समयसार की आत्मख्याति एवं तात्पर्यवृत्ति टीका की हिन्दी भाषा में उपलब्ध टीकायें अनेकों बार पढ़ी; किन्तु डॉ. भारिल्ल की ज्ञायकभावप्रबोधिनी हिन्दी टीका से जो विषयवस्तु स्पष्ट हुई, वह इसके पूर्व कभी विचार में नहीं आयी। समयसार के हार्द को समझनेवाले अन्य महानुभावों को सर्व मनोयोग से ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका अवश्य पढ़ना चाहिये। आपने उक्त टीका लिखकर सत्जिज्ञासु महानुभावों पर महान उपकार किया है।''

विधान सानन्द सम्पन्न

अलवर (राज.) : यहाँ 7 अक्टूबर को श्री नेमीचंदजी परिवार (इण्डियन को. बैंक) की ओर से आयोजित श्री सम्मेदशिखर विधान प्रतिष्ठाचार्य श्री जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन एवं पण्डित श्री अजितकुमारजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

मुमुक्षु एवं विद्वत् महासम्मेलन तथा प्रशिक्षण शिविर देवलाली में -

जयपुर। पूज्य कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के संयोजकत्व में दि.5 से 7 मई, 07 तक अध्यात्मतीर्थ देवलाली में मुमुक्षु एवं विद्वत् महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी जयपुर में आयोजित शिक्षण-शिविर के अवसर पर श्री मुकुन्दभाई खारा, श्री कान्तिभाई मोटानी एवं प्रवीण भाई वोरा आदि ट्रस्टियों की उपस्थिति में उक्त ट्रस्ट की ओर से पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने दी। आपने प्रमुख मुमुक्षु भाईयों एवं विद्वत्वर्ग से पधारने का अनुरोध करते हुए बताया कि श्री अखिल भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल इस समारोह की अध्यक्षता करेंगे।

समारोह में सामाजिक एकता तथा वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में मुमुक्षुओं की भावी भूमिका विषय पर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

इस अवसर पर विद्वत्वर्ग से समाज को क्या आशाएँ व अपेक्षाएँ हैं; उनकी दशा और दिशा पर भी गहन चर्चा की जाएगी।

स्मरण रहे कि इसी क्रम में दिनांक 8 मई से 25 मई तक देवलाली में शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा ।

ह्न **अखिल बंसल**

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

१४. किसने देखे नरक ..... ?

ज्ञानेश ने अपने भाषण में मानव–जन्म की दुर्लभता पर प्रकाश डालते हुए इस दुर्लभ मानव जीवन एवं सबप्रकार के अनुकूल–प्रतिकूल संयोगों का आत्मकल्याण में सदुपयोग करने की प्रेरणा कुछ इस ढंग से दी कि सभी को यह अहसास होने लगा कि सचमुच अपने शेष जीवन का एक क्षण भी अब राग–रंग में, विषय–कषाय में एवं इन्द्रियों के भोगों में खोना मानो अनन्त काल के लिए अनन्त दु:खों को आमंत्रण देना है। यदि यह अवसर चूक गये तो....।

अत: अब एक क्षण भी इन विषय–कषायों व राग–द्वेष में बर्बाद करना उचित नहीं है।

देखो, धन कमाते–कमाते, धन का विविध भोगों के माध्यम से उपयोग करते–करते यदि जिन्दगी बीत जायेगी तो पुन: यह अवसर नहीं आयेगा; क्योंकि यह विषयानन्दी पापमय रौद्रध्यान है, जिसके फल में हमें नरकों में अनन्त दु:ख भोगने होंगे।

जो धर्मशास्त्रों के स्वाध्याय को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लेते हैं, वे आत्मज्ञान के बल से धीरे–धीरे अपनी इच्छाओं को जीत लेते हैं; इसकारण उनको विषयों की इच्छा व्यर्थ लगने लगती है। वे पुण्योदय से प्राप्त न्यायोपात्त सामग्री में ही संतुष्ट रहते हैं। ऐसे संतुष्ट प्राणियों के पास पुण्य के फल में सुख के बाह्य साधनों की भी कमी नहीं रहती। इसकारण वे व्यक्ति सब तरह से सुखी रहते हैं।''

ज्ञानेश ने आगे कहा ह्न ''अरे ! जिस धन के लिए हम ऐसे पागल हो रहे हैं, वह धन तो धर्मात्माओं के चरण चूमता हुआ चला आता है और धर्मात्मा उसकी ओर देखते तक नहीं हैं। क्या देखें उसे ? है क्या उसमें देखने लायक ? अत: अर्थशास्त्र के साथ–साथ धर्मशास्त्र का भी गहन अध्ययन किया जाये तो निश्चित ही सन्मार्ग मिलना सुलभ हो सकता है।''

ज्ञानेश ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा ह्न **''जिन भावों में हम दिन–रात मग्न हैं, उन आर्त–रौद्ररूप खोटे–पापमय भावों का फल तिर्यंच और नरक गति है।''**

सेठ लक्ष्मीलाल ने ऐसी बातें तो कभी सुनी ही नहीं थीं। वह तो दिन–रात धन कमाने की धुन में माथा धुनता रहता था। साधनों की पवित्रता की परवाह किए बिना ही पाँचों इन्द्रियों के विषयों में आनंद माननेरूप विषयानन्दी रौद्रध्यान में ही डूबा रहता था। अत: ज्ञानेश के मुख से रौद्रध्यान संबंधी बातें सुनकर सेठ का रोम–रोम सिहर उठा, उसकी रुह काँप गई।

सेठ को विचार आया कि ''मैं तो दिन–रात इन्हीं भावों में डूबा हूँ। अरे ! इतना भयंकर दु:खद है इस रौद्रध्यान का फल।''

ज्ञानेश का भाषण चालू था, उन्होंने आगे कहा ह्न ''बहुत से लोगों को तो यह भी पता नहीं होगा कि ये नरक क्या बला है ? अरे भाई ! ये ऐसी दुर्गतियाँ हैं जहाँ हमें हमारे पापाचरण का अत्यन्त दु:खद फल असंख्य वर्षों तक सहना पड़ता है। यदि उन्हें यह पता होता तो वे लोग व्यर्थ ही इस रौद्र भावों के चक्कर में नहीं पड़े रहते, जिसके फल में पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़ों की योनियाँ मिलती हैं।

एक श्रोता बोला ह्न ''किसने देखे नरक ?''

ज्ञानेश ने कहा ह्न अरे भाई ! यदि कोई एक जीव की हत्या करता है तो उसका फल एक बार फाँसी की सजा है; परन्तु जो रोजाना अपने स्वाद और स्वार्थ के लिए अनन्त जीवों की हिंसा करता हो, उसको अनन्त बार फाँसी जैसी सजा इस नरभव में तो मिलना संभव नहीं है। अत: कोई ऐसा स्थान अवश्य होना चाहिए कि जहाँ प्रतिसमय मरण–तुल्य दु:ख हो; बस उसी स्थान का नाम नरक है, जो कि हिंसा आदि पाँचों पापों के फल में प्राप्त होता है।

धंधा–व्यापार तो बारहों मास चलता ही रहता है परन्तु धन का आना न आना, हानि–लाभ होना तो पुण्य–पाप के अनुसार ही होता है। महाकवि तुलसीदास ने कहा है ह्न

''हानि–लाभ, जीवन–मरण, सुख–दु:ख विधि के हाथ''

जिसके पास पैसा आता है छप्पर फाड़कर चला आता है और जिसके भाग्य में नहीं होता वह दिन–रात दुकान पर बैठे–बैठे मक्खियाँ भगाया करता है। अत: पुण्य–पाप पर भी थोड़ा भरोसा करके समय अवश्य निकालो।

सेठ ने उद्घाटनकर्त्ता के पद से बोलते हुए हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में कहा ह्न ''भाई ज्ञानेश का कहना बिल्कुल सही है। हम लोग व्यापारी अवश्य हैं, पर सचमुच व्यापार करना भी अभी हमें नहीं आया।

अब कुछ–कुछ यह समझ में आ रहा है कि असली व्यापार तो आप ही कर रहे हो। हम तो सचमुच बासा खा रहे हैं, पुराने पुण्य का फल भोग रहे हैं। नई कमाई तो अभी तक कुछ भी नहीं की है। **वह काहे का व्यापार, जिसमें पाप ही पाप हो। सचमुच आत्मकल्याण का व्यापार ही असली व्यापार है।** मैंने अबतक आप जैसे सत्पुरुषों के व्याख्यानों की उपेक्षा करके बहुत बड़ी भूल की है। मैं प्रयास करूँगा कि अब मैं आपके प्रवचनों का अधिक लाभ लूँ।''

ज्ञानेश के मन में इस बात की प्रसन्नता हुई कि सेठ ने भाषण को ध्यान से सुना और कुछ–कुछ समझने का प्रयास भी किया।

ज्ञानेश ने सोचा ह्न सेठ की पकड़ भी ठीक है, बुद्धि तो विलक्षण है ही। अन्यथा बिजनिस में सफल कैसे होता ? यदि होनहार भली होगी तो सेठ का कल्याण होगा ही ह्न ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।''

उद्घाटन का कार्यक्रम पूरा हुआ। अन्त में राष्ट्रीय आत्मगीत के साथ सभा विसर्जित हुई। ●

१५ हार में भी जीत छिपी होती है

सेठ लक्ष्मीलाल विद्याआश्रम में विशिष्ट–अतिथि के रूप में मात्र एक दिन के लिए आये थे, दूसरे दिन का वापिसी टिकिट भी साथ लाए थे। अधिक ठहरने का उनके पास समय ही कहाँ ? व्यापार के अलावा सामाजिक संस्थाओं वाले भी इन्हें पदों का प्रलोभन देकर उलझाये रहते हैं।

इन सबके बावजूद भी ज्ञानेश के एक घण्टे के भाषण से ही वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने समस्त आगामी कार्यक्रम निरस्त करके तथा अनुकूलताओं–प्रतिकूलताओं की परवाह न करके जो भी सुविधायें संभव थीं, उन्हीं में संतोष करके पूरे पन्द्रह दिन रुककर प्रवचनों का लाभ लेने का निश्चय कर लिया।

सेठ के साथ में आए प्रो. गुणधरलाल, विद्याभूषण और बुद्धिप्रकाश को सेठजी के इस आकस्मिक परिवर्तन पर आश्चर्य हो रहा था। वे परस्पर बातें कर रहे थे।

प्रो. गुणधर ने कहा ह्न ''सेठजी को अचानक यह क्या हो गया ? इतना बड़ा परिवर्तन ! जो घर से केवल कौतूहलवश एक दिन को आये थे, जिन्हें ऐसे तात्त्विक प्रवचनों में कोई खास रुचि नहीं थी, वे केवल एक घंटे के प्रवचन से इतने अधिक प्रभावित हो गये हैं। ऐसा क्या जादू कर दिया सेठजी पर ज्ञानेशजी ने ?''

दूसरे वरिष्ठ विद्वान विद्याभूषण बोले ह्न ''अरे भाई ! ज्ञानेश के प्रवचनों में तो जादुई असर है ही, व्यवहार ही मधुर है और स्वभाव भी मिलनसार है। देखो न ! छोटे से छोटे बालकों और बड़े से बड़े विद्वानों को कितने स्नेह और आदरपूर्वक बुलाते हैं, प्रेमालाप करते हैं, मानो करुणा और स्नेह की साक्षात् मूर्ति हों। प्रवचनों के बीच–बीच में श्रोताओं का नामोल्लेख करके सजग तो करते ही हैं, उन्हें महत्त्व देकर, उनमें अपनापन भी स्थापित कर लेते हैं। उनके सुख–दु:ख में भागीदारी निभाते हैं।''

ज्ञानेश को सेठजी की धार्मिक अज्ञानता पर तरस तो आ ही रहा था; अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने प्रवचन के बीच में ही करुणा के स्वर में कहा ह्न ''अरे सेठ ! सत्तर–बहत्तर बसन्तें तो देख ही ली होंगी आपने? मनुष्य की जिन्दगी ही कितनी है ? अधिक से अधिक शतायु हुए तो बीस–पच्चीस वर्ष ही और मिलेंगे, भरोसा तो एक पल का भी नहीं है। मान लो दस–बीस वर्ष मिल भी गये तो वे भी 'अर्द्धमृतक सम बूढ़ापनो' में गुजरने वाले हैं। यदि तत्त्वज्ञान के बिना ही हमारा यह जीवन चला गया, यदि हम यह मानव जीवन पाकर भी धर्म नहीं समझ पाये; तो फिर हमें अगला जन्म कहाँ/किस योनि में लेना पड़ेगा, इसकी खबर है ?

दिन–रात भक्ष्य–अभक्ष्य खाते–पीते हमारे जो अशुभ भाव रहा करते हैं, उनका क्या फल होगा ? इस बात पर विचार किया कभी हमने ? यदि हम मरकर मच्छर बन गए तो हमारे बेटे ही हम पर डी.डी.टी छिड़ककर मार डालेंगे। यदि अपने घर की खाट में खटमल हो गए तो हमारे बेटे–बहू ही कैरोसीन छिड़ककर हमारी जान ले लेंगे। यदि कुत्ता–बिल्ली के पेट से पैदा हो गये तो नगरपालिकाओं द्वारा पकड़वाकर जंगल में छुड़वा दिये जायेंगे। यदि गाय–भैंस–बकरी आदि पशु हो गये तो क्या वहाँ रहने को एयरकंडीशन, मच्छरों से बचने को गुडनाइट और सोने के लिए डनलप के गद्दे मिलेंगे ? अरे ! खाने को मालिक जैसी सड़े–गले भूसे की सानी बनाकर रख देगा, वही तो खानी पड़ेगी, बेकार होने पर बुढ़ापे में बूचड़खाना भेज दिये जाओगे।

यदि ऊँट, बैल, गधा, घोड़ा हो जायेंगे तो शक्ति से भी कई गुना अधिक भार लाद कर जोता जायेगा; चलते नहीं बनेगा तो कोड़े पड़ेंगे, लातों–घूसों से मार पड़ेगी; जरा कल्पना करके तो देखें ! जेठ माह की गर्मी, माघ माह की शीत और मूसलाधार बरसात में भूखे–प्यासे खुले आकाश में खड़े रहना पड़ेगा। सब कुछ चुपचाप सहना होगा। कहने–सुनने लायक जबान भी नहीं मिलेगी।

मछली, मुर्गी, सूअर, बकरा, हिरण जैसे दीन–हीन पशु हो गये तो मांसाहारियों द्वारा जिन्दा जलाकर भूनकर, काट–पीट कर खाया जायेगा।

यदि हम चारों गतियों के अनन्तकाल तक ऐसे अनन्त दु:ख नहीं सहना चाहते हैं तो अपने भावों को पहचाने, वर्तमान परिणामों की परीक्षा करें और यह समाज की झूठी–सच्ची नेतागिरी, यह न्याय–अन्याय से कमाया धन, ये स्वार्थ के सगे कुटुम्ब परिवार के लोग कहाँ तक साथ देंगे ? इस ओर भी थोड़ा विचार करें। **(क्रमश:)**

जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन

दिल्ली। मीडिया के प्रभावी युग में जैन पत्रकारिता को नई दिशा प्रदान करने के पावन उद्देश्य से 2 अक्टूबर को विजयादशमी पर्व के अवसर पर अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का गठन किया गया। जैन पत्र सम्पादक संघ के संयोजक अखिल बंसल ने सभी जैन पत्रों के सम्पादकों को संघ से जुड़ने का आह्वान किया है। शीघ्र ही संघ राष्ट्रीय स्तर पर सभी सम्पादकों का सम्मेलन आयोजित कर भावी भूमिका की दिशा निर्धारित करेगा। संघ के विस्तार व उसे सार्थक बनाने हेतु सम्पादक महानुभावों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं। **ह्न अखिल बंसल**

संयोजक, अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ,
129, जादोन नगर 'बी' दुर्गापुरा, जयपुर ह्न 302018
मोबाईल : 09314515197

शुभ कामनायें !

जयपुर निवासी श्री धनकुमारजी जैन (गोधा) के सुपौत्र एवं श्री सुनीलकुमारजी जैन सूरत के सुपुत्र चि. स्वप्निल का सौ. प्रशाखा सुपुत्री श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटोदी कोलकाता (मिर्जापुरवालों) के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आप दोनों लौकिक जीवन के साथ–साथ पारलौकिक जीवन का निर्माण करें – यही भावना है।

इस उपलक्ष में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान को 1001/– रुपये सहयोग राशि प्राप्त हुई; एतदर्थ धन्यवाद ! **– प्रबन्ध सम्पादक**

पधारिये, अवश्य पधारिये ! !! श्री नेमिनाथ

राजस्थान की प्रसिद्ध नगरी बांसवाड़ा के निकट कूपड़ा में श्री ज्ञायक

श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्या

(गुरुवार, दिनांक 30 नवम्बर से बु

महोत्सव स्थल : शौरीपुर न

रत्नत्रयतीर्थ 'ध्रुवधाम'

आपको सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि राजस्थान के दक्षिण–
संस्थापित **रत्नत्रयतीर्थ 'ध्रुवधाम'** में श्री पंचबालयति दिगम्बर जिनमन्दिर, श्री स
संकुल में श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन, आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय
इसकी प्रतिष्ठा हेतु **श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। अत: आप सभी तत्त्वरसिक महानुभाव हमारा भाव

विद्वत्समागम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी झांझरी, पण्डित शैलेषभाई शाह।

मांगलिक

प्रतिदिन प्रात: पूज्य गुरु

30 **नवम्बर** – शांतिजाप, मंगल कलश एवं जिनेन्द्र शोभायात्रा, ध्व
1 **दिसम्बर** – घटयात्रा जुलूस, वेदी, कलश, ध्वज शुद्धि, गर्भकल
2 **दिसम्बर – गर्भकल्याणक** – 16 स्वप्नों का फल, माता व अ
3 **दिसम्बर – जन्मकल्याणक** – विशाल जुलूस, इन्द्र द्वारा ताण्ड
4 **दिसम्बर – तपकल्याणक** – नेमिकुमार की बारात, तपकल्या
5 **दिसम्बर – ज्ञानकल्याणक** – आहारदान, समवशरण रचना,
6 **दिसम्बर – मोक्षकल्याणक** – गिरनार पर्वत रचना, रथयात्रा,

स्वागताध्यक्ष	अध्यक्ष	कार्याध्यक्ष	महामंत्री	उपाध्यक्ष
कान्तिलाल खोडणिया	ताराचन्द जैन	महीपाल ज्ञायक	धनपाल ज्ञायक	कन्हैयालाल दलावत उदयपुर, चन
02968-240047	94141 56533	94141 03475	94141 01432	धनपाल दोशी बाँसवाडा, गुलाबच
				जयकुमार जैन रत

निवेदक : श्री 1008 नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव समिति, **रत्न**

थाय नमः !! अपूर्व धर्मलाभ लीजिये !!

क पारमार्थिक ट्रस्ट (रजि.) द्वारा संस्थापित रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम में

ाणक प्रतिष्ठा महोत्सव, बाँसवाड़ा (राज.)

ुधवार, दिनांक 6 दिसम्बर, 2006 तक)

नगरी, कुशलबाग मैदान, बाँसवाड़ा (राज.)

-पूर्वी अंचल में स्थित प्रसिद्ध नगरी बांसवाड़ा के निकट कूपड़ा ग्राम में श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट (रजि.) द्वारा मवशरण जिनमन्दिर एवं भगवान महावीरस्वामी मानस्तंभ का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। साथ ही ध्रुवधाम महाविद्यालय, ब्राह्मी–सुन्दरी सरस्वती निलय एवं राजा श्रेयांस भोजनालय का भी निर्माण किया गया है। **महोत्सव** का आयोजन **गुरुवार, दिनांक 30 नवम्बर से बुधवार, 06 दिसम्बर 2006** तक अनेक भव्य आयोजनों भीना आमंत्रण स्वीकार कर अवश्य पधारें।

क कार्यक्रम

देवश्री का सी.डी. प्रवचन

जारोहण, कलशस्थापना, पंचपरमेष्ठी विधान, इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रा।

्याणक की पूर्व क्रिया, इन्द्रसभा–राजसभा, 16 स्वप्नों का प्रदर्शन।

ष्ट देवियों की मार्मिक तत्त्वचर्चा।

डव नृत्य, 1008 कलशों से जन्माभिषेक, पालनाझूलन।

णक की शोभायात्रा, दीक्षावन में वैराग्य प्रवचन।

दिव्यध्वनि प्रसारण।

श्रीजी विराजमान, जिनवाणी स्थापना, कलशारोहण, शांतियज्ञ।

	मंत्री	कोषाध्यक्ष
द्रेश एल. भूता दाहोद,	कचरूलाल मेहता उदयपुर	वीरेन्द्र ज्ञायक
न्द देवडिया अरथूना,	विनोद भरडा बाँसवाडा	9414101433
लाम	मुकेश ज्ञायक दाहोद